International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 692-693

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(5): 692-693
www.allresearchjournal.com
Received: 12-03-2017
Accepted: 14-04-2017

महेन्द्र प्रताप गौतम
कीट विज्ञान विभाग सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्व विद्यालय, मोदी पुरम मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

डॉ शिशुपाल सिंह
विभाग कृषि, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

अषीष उमराव
सस्य विज्ञान विभाग, चौ0 श्रव0 कु0 हि0 प्र0 कृषि विश्व विद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत।

Correspondence
महेन्द्र प्रताप गौतम
कीट विज्ञान विभाग सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्व विद्यालय, मोदी पुरम मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

मक्के की फसल में कीड़ों एवं रोगों का प्रबन्धन

महेन्द्र प्रताप गौतम, डॉ शिशुपाल सिंह, अषीष उमराव

परिचय

मक्के की फसल अपने देश में किसी समय उगाई जाने वाली फसल है।
परन्तु कम उत्पादकता एवं उत्पादन घटाने में कीड़ों एवं रोगों का महत्वपूर्ण स्थान है। कीटों एवं रोगों द्वारा मक्के की फसल को प्रतिवर्ष 60–70 तक की हानि होती है। मक्के की फसल भारत के प्रत्येक राज्य में उगाई जाती है, जिसमें से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, तेलागाना, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र प्रमुख हैं। जिस प्रकार मौसम बदल रहा है उतनी तेजी से कीड़ों एवं रोगों का बढ़ रहा है। जिससे फसल हानि एक बड़ी समस्या बन गयी है। अतः सही समय पर सही प्रबन्ध कर कीड़ों एवं रोगों से बचाव हो सकता है।
यदि किसान भाई निम्नलिखित वैज्ञानिक प्रक्रिया अपनाएंगे तो किसानों की लागत कम लाभ अधिक होगा।

1. **खरपतवार नाशकः–** खेतों में विभिन्न प्रकार के खरपतवार उग आते हैं। जिससे उनको उचित दैहिक कीटनाशक का प्रयोग कर नष्ट कर सकते हैं। जिससे रोगों एवं कीड़ों का वास–स्थान नष्ट हो जायेगा।
2. **कृषि प्रबन्धनः–** उचित नमी पौधों के विकास में सहायक होती है, जिसमें डिस्क वाले हैरो से 2 बार पूर्व पश्चिम एवं उत्तर दक्षिण दिशा में जुताई करें। बुआई में गहराई 4–5 सेमी0 रखनी चहिए। बीजों की लकीर प्रणाली से बुआई करनी चहिए।
   छिड़कावः– जुताई करने से पहले कुछ जैविक खादों का प्रयोग कर रोगों से बचाव कर सकते हैं। उदा० ट्राइकोडर्मा विरिडी, स्पूडोमास इत्यादि।
3. **प्रमणित एवं प्रतिरोधक बीजः–**हमेशा प्रमाणित बीज की बुआई करने से अच्छा लाभ प्राप्त किया जा सकता है।
4. **प्रतिरोधक प्रजातियाँः–** KDH458R, KDH, 8M80704, MTPEH6763
5. **बीज मात्राः–** शुद्ध फसल में – 20–25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर (60.20सेमी) सह फसली सोयाबीन – 15 किलोग्राम प्रतिहेक्टेअर (1:2 अनुपात में) चारा के लिऐ 40–50 किलोग्राम प्रतिहेक्टेअर
6. **खाद प्रबन्धनः–** 20–25 टन प्रति एकड़ गोबर की खाद का प्रयोग कर अच्छी फसल की पैदावार की जा सकती है। इसके बाद अन्य रासायानिक खादों की आवश्यकता नहीं होगी।
7. **सिंचाईः–** प्रथम सिंचाई 25–30 दिनों के बाद करनी चाहिये।
   द्वितीय सिंचाई मादा एवं नर फूल आ जाने के समय करनी चाहिये।
8. **सीमवती फसलेः–** लहसुन, अदरख, गेदें के फूल लगाकर विभिन्न प्रकार के कीड़ों एवं रोगों से बचाव किये जा सकते हैं।
9. **खरपतवारः–** बुआई के 40–45 दिनों के बाद खरपतवार को बीडर की सहायता से नष्ट कर सकते हैं। यदि लकीर प्रद्धति से बुआई की गई है।
10. **छिड़काव का समयः–** उचिस समय एवं पूर्ण लक्षण देखकर उचिस कीटनाशक एवं फफूद नाशक का प्रयोग करना चाहिये।

मक्का के प्रमुख कीट

तना बेधक कीट (हेलिकोवर्पा अर्मीजेरा)
सवनामः–सूंडी (ग्रव)
प्रकोप का समयः– मार्च से मई
हानि पहुचाने वाली अवस्थाः– इल्ली (कैटर पिलर)

पहचानः– तना बेधक प्रारम्भ में तने में छिद्र कर अन्दर जाते हैं। जिससे पौधा सूख जाता है। तने के उपरी भाग निकालने पर उसमें गंध आती है। यह गुट्टे को भी खाता है।

प्रबन्धनः– जैविकः– 5–10 ट्राइकोफार्ड प्रति हेक्टेअर की दर से प्रयोग करना चाहिये। न्यूक्लियोपालीहेडो वायरस का प्रयोग कर 250 ली०/हेक्टेअर का छिड़काव करना चाहिये।

रासायनिकः– इमामेक्टिन बेन्जोऐट 5/5 ग्राम का 250 ग्राम प्रति हेक्टेअर की दर से छिड़काव करना चाहिये।
इन्डोक्सा कार्व 15.p% Ec का 500 मिली० प्रति हेक्टेअर की दर से छिड़काव करना चाहिये।
मक्का की प्ररोह मक्खी (शूट फ्लाई)

समनाम– मृतगोम मक्खी
प्रकोप का समय– मार्च से मई
हानि पहुँचाने वाली अवस्थाः– संडी (ग्रव)

पहचानः– यह पौधों के तने वाले भाग में अण्डे देती है जब वयस्क अवस्था की लुंडी कोमल भाग को खाकर उसके उपरी भाग को सूखा देती है।

प्रबन्धनः– जैविकः– फेरोमोन ट्रौप का प्रयोग 10–12 प्रति हेक्टेअर। 10ली० प्रति इकाई लहसुन एवं गाय मूत्र का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।
st का 1 ली० प्रति हेक्टेअर जीवाणु का छिड़काव करना चाहिये।

रासाायनिकः– इनिडाक्लोरनिड 70% ws@ 700 ग्रा० प्रति किलो बीज

मक्के के प्रमुख रोग
टर्सिकम पत्ती अंगमारी

रोग–कारकः– हेलमिन्थोस्चोरियम टर्सिकम (हेलमिन्वोस्चोरियम मायडिस)

प्रकोप का समयः– बुआई के 30–35 दिनों बाद दिखाई देता है।

पहचानः– पत्तियों के उपरी सतह पर पीले रंग की पट्टी दिखाई देती है जो कि 2–5 सेमी से 4 सेमी तक फैली रहती है। यह पौधे के प्रौण अवस्था में अत्यधिक दिखाई देती है। आर्द्रता अधिक होने पर रोग अत्यधिक क्रियाशील हो जाता है।

प्रबन्धनः– जैविकः– बीजों को ट्राइकोडर्मा विरिडो से उपचारित करना चाहिये।

रासायनिकः– मैकोजेब 64 +मेटालैग्जिल 8 /@ 1000 म को 400 ली० पानी से प्रति एकड़ छिड़काव करना चाहिये।
चारकोल रोट (मैकोफोमिना फैसिवोलिना)

रोग कारकः– राजक्टोनिया वटैटिकोला
रवी की फसल में जब 30–35 ac तापमान होता है तो यह अधिक तेजी से फैलता है।

पहचानः– यह रोग वयस्क पौधे में दिखाई देता है। इसके प्रभाव से पौधा धीरे–धीरे पूर्ण रुप से नष्ट हो जाता है।

प्रबन्धनः– जैविकः– बीजो को ट्रइकोडर्मीवरडी से उपचारित करना चाहिये।

रासायनिकः– मेटालैम्जिल 35% ws@ 0.75-1.0 किग्रा प्रति 100 किग्रा० बीज उपचार
1 किग्रा प्रतिएकड़ कार्बेन्डाजिन का छिड़काव करना चाहिये।
2) मृट्टरोमिल आसिता (डाउनी मिल्डयू)
रोग–कारकः– बुआई के 40–45 दिनो बाद जब आर्द्रता अधिक हो और तापमान कम होता है।

पहचानः– यह बीजों से प्रारम्भ होकर वयस्क पौधे में पत्तियों के निचली सतह पर जालानुमा उपस्थित होता है।

प्रबन्धनः– टर्सिकम पत्ती अंगमारी की तरह